प्रत्याशित चुनौतियाँ और कुछ समाधान

विपिन कुमार

कुछ दिनों पहले टीकाकरण से सम्बन्धित कार्य के लिए मेरा बस्सी आड़ा पंचायत (बाँसवाड़ा, राजस्थान) में जाना हुआ। वहाँ एक चाय-नाश्ते की दुकान पर मैंने एक छोटी लड़की को काम करते देखा। उसकी उम्र 9-10 वर्ष रही होगी। मैंने पूछा तो उसने अपना नाम ऋतु बताया। मैंने पूछा कि तुम स्कूल जाती हो। तो उसने स्थानीय भाषा में बताया कि पहले जाती थी, अब नहीं। मैंने उससे पूछा कि वह कौन-सी कक्षा में पढ़ती है। ऋतु ने जवाब दिया कि उसे नहीं पता। मैंने सोचा कि वह जब स्कूल जाती थी, शायद उस समय की कक्षा बता पाएगी। लेकिन ऋतु को यह भी याद नहीं था। इस समय के दौरान अधिकांश बच्चे या तो बचपन की मस्ती में रमे हैं या रोज़मर्रा के कामों में लगे हुए हैं, कारण चाहे जो भी हो सच्चाई यह है कि बच्चे स्कूल से दूर हो गए हैं। इससे अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि बच्चों के सीखने-सिखाने को लेकर शिक्षकों की जो चिन्ताएँ हैं वे ग़लत तो नहीं हैं। ऋतु से मैंने थोड़ी बात गिनती और जोड़-बाक़ी को लेकर भी की। उसे ठीक से गिनती भी नहीं आती। उसकी उम्र के हिसाब से स्कूल में कक्षा 4 या 5 में उसका नाम रहा होगा।

प्रमुख चुनौतियाँ

मैं इस महामारी के दौर में दक्षिणी राजस्थान के बाँसवाड़ा ज़िले में शिक्षकों और बच्चों के लगातार सम्पर्क में रहा हूँ। यहाँ अरावली की पहाड़ी शृंखला का अन्त होता है, जिसके कारण यहाँ पर छोटी पहाड़ियाँ और टापूनुमा धरातल देखने को मिलता है। ज़िले की लगभग 85 प्रतिशत जनसंख्या आदिवासी है। भौगोलिक स्थिति और संसाधनों के आधार पर वर्तमान में इस क्षेत्र में बच्चों के सीखने-सिखाने को लेकर चार मुख्य चुनौतियाँ नज़र आ रही हैं।

ऑनलाइन सीखने के लिए संसाधनों की अनुपलब्धता

ज़िले की ज़्यादातर जनसंख्या गाँव में निवास करती है। लोगों के पास ऑनलाइन शिक्षण के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं हैं। 80 प्रतिशत अभिभावकों के पास एंड्रॉयड मोबाइल नहीं हैं। जिनके पास हैं भी उनमें से भी ज़्यादातर लोग बहुत आवश्यकता पड़ने पर इंटरनेट वाला रिचार्ज करवाते हैं। ऐसी परिस्थिति में बच्चों को ऑनलाइन माध्यमों से जोड़ने का भी रास्ता दिखाई नहीं देता। सरकार ने टीवी और रेडियो के माध्यम से कुछ शैक्षणिक कार्यक्रम प्रसारित किए, लेकिन यह माध्यम भी गाँवों में शायद ही इस्तेमाल किए जाते हैं। किसी शिक्षक को ऑनलाइन केवल सुनकर या देखकर सीखना अपने आप में चुनौतीपूर्ण है।

ऐसा नहीं है कि शिक्षकों ने प्रयास नहीं किए हैं। यहाँ स्कूल में आने वाले ज़्यादातर बच्चे स्कूल आने वाली पहली पीढ़ी के हैं। ऐसे में ऑनलाइन अगर कुछ भेज भी दिया जाए तो उसे समझने में बच्चों को मदद करने वाला घर में कोई नहीं है। कुल मिलाकर सरकारी कार्यक्रमों के अन्तर्गत प्राथमिक स्कूल के स्तर पर जो ऑनलाइन शिक्षण-प्रक्रियाएँ चल रही हैं वे काफ़ी हद तक असफल रही हैं।

छितरे हुए घर

यहाँ गाँव में मोहल्ले जैसे नहीं होते हैं, घर दूर-दूर होते हैं। हो सकता है कोई घर आपको पहले घर से 50 मीटर की दूरी पर मिल जाए, लेकिन उससे अगला घर 500 मीटर या 1 किलोमीटर की दूरी पर हो। इस कारण से बच्चों को किसी स्थान विशेष पर छोटे-छोटे समूहों में इकट्ठा करके पढ़ाना भी एक चुनौती है। इस कारण ज़्यादातर स्कूलों के ज़्यादातर बच्चे शिक्षकों के साथ बहुत कम समय के लिए अन्त:क्रिया कर पा रहे हैं। शिक्षकों का अनुभव रहा है कि इस तरह के प्रयासों में एक समूहों के बच्चों के साथ 1-2 घण्टे ही काम हो पाता है। अगले दिन दूसरी जगह पर जाकर दूसरे समूह के साथ काम करना होता है। कुल मिलाकर देखें तो बच्चों के साथ अन्त:क्रिया का समय और अन्त:क्रिया की निरन्तरता दोनों ही अपर्याप्त हैं।

मौजूदा अन्तराल और कक्षा-स्तर के अनुरूप शिक्षण

कक्षा के जिस स्तर पर बच्चे गुणा, भाग, भिन्न और दशमलव सीख रहे होते हैं, उस स्तर पर शिक्षकों को उन्हें गिनती और जोड़-बाक़ी सिखाना होगा। यह वास्तव में शिक्षकों के लिए चिन्ता का एक वाजिब कारण है। अगर एनएएस[1] और असर[II] की रिपोर्ट को देखें तो हम पाते हैं कि नियमित रूप से चलते स्कूलों में भी 50 प्रतिशत से ज़्यादा बच्चे भाषा और गणित में स्तरानुसार नहीं सीख पाते हैं। ऐसे में 18 महीने के गैप ने प्राथमिक शिक्षा को गहरे अँधेरे में धकेल दिया है।

विज्ञान के शिक्षकों की सबसे बड़ी चिन्ता है कि वे बच्चों को कुछ प्रयोगों और गतिविधियों के माध्यम से विज्ञान को सिखा पाते थे जो अभी सम्भव नहीं है। विज्ञान में नए शब्दों की

अवधारणात्मक समझ को लेकर बच्चों के साथ निरन्तर संवाद की आवश्यकता होती है जिसे मोहल्ला क्लास जैसे माध्यमों में निरन्तर कर पाना मुश्किल होता है।

उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान और गणित के शिक्षकों की एक और चिन्ता यह है कि इस स्तर पर पूर्व कक्षा में सीखी गई अवधारणाएँ बहुत महत्त्वपूर्ण होती हैं और उनको सीखने में पर्याप्त समय चाहिए होता है। ऐसे में जब बच्चे दो कक्षाएँ प्रमोट हो चुके हैं तो उनको सामान्य स्तर पर लाना भी बड़ी चुनौती है। कुछ अनुभव शिक्षकों ने ऐसे भी बताए हैं कि इस स्तर पर विषयवस्तु प्राथमिक स्तर की तुलना में बढ़ जाती है जिसके कारण बच्चों का पठन और लेखन-कौशल महत्त्वपूर्ण हो जाता है। जिन बच्चों को पढ़ना और लिखना ठीक से नहीं आ पाया है उनको दिया गया गृहकार्य भी अपूर्ण ही रहता है। जिसके कारण यह बच्चे और पिछड़ रहे हैं। इन सब परिस्थितियों में भी शिक्षक बच्चों के साथ काम करने का निरन्तर प्रयास कर रहे हैं।

स्कूल की दिनचर्या में लौटना

स्कूल खुलने के बाद बच्चे जब विद्यालय में आएँगे तो शिक्षकों की चिन्ता है कि लगभग 2 साल तक स्वच्छन्दता से रहने के बाद बच्चों को पूरे दिन विद्यालय में शिक्षण-गतिविधियों में व्यस्त रखना भी एक चुनौती होगी। क्योंकि बच्चों की लगातार 6 घण्टे तक विद्यालय में रहने की आदत छूट चुकी है। अभी मोहल्ला कक्षाओं में बच्चे केवल 1 से 2 घण्टे ही बैठते हैं, क्योंकि इस समय तक बच्चों को भूख लग आती है और मोहल्ला कक्षाओं में मध्याह्न भोजन की व्यवस्था नहीं होती है।

शिक्षकों के लिए कुछ सुझाव

सबसे पहले सभी अभिभावकों से बात करके बच्चों की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करना। दूसरा बच्चों के लिए विद्यालय में एक ख़ुशनुमा और सुखद माहौल बनाना ताकि बच्चे नियमित रूप से और उत्साहपूर्वक स्कूल आएँ। उनका विद्यालय और शिक्षकों से जो भावनात्मक जुड़ाव है वह बन पाए, यह बच्चों के सीखने और सीखने की तत्परता के लिए महत्त्वपूर्ण है। बच्चों का स्तरानुसार आकलन करना बहुत ज़रूरी होगा और इस आकलन को जितना परस्पर संवादात्मक बना पाएँगे उतना अच्छा होगा। केवल पेपर-पेंसिल टैस्ट से काम नहीं बनेगा। शायद बहुत सारे बच्चों को यह चुनौतीपूर्ण भी लगे, जो उनके विद्यालय आने के उत्साह को तोड़ सकता है।

शुरुआत में हमें बच्चों के मौजूदा स्तर के अनुसार कुछ समूह बनाकर सभी को उनकी वर्तमान कक्षा-स्तर तक लाने के लिए प्रयास करने चाहिए। बच्चों के सीखने के स्तर में परिवर्तन के साथ यह समूह निरन्तर बदलते रहने चाहिए। अभी जो काम नज़र आता है वह प्राथमिक स्तर पर भाषा, गणित और पर्यावरण अध्ययन में आधारभूत कौशलों के इर्द-गिर्द ही रहेगा और उच्च प्राथमिक स्तर पर विषयवार मूलभूत अवधारणाओं और कौशलों पर। कम-से-कम दो माह इस प्रकार के काम पर ध्यान देने की ज़रूरत है। निरन्तर समीक्षा से पता चलेगा कि इसे और कितना बढ़ाने की ज़रूरत होगी। इसके बाद हम कक्षावार बच्चों की ज़रूरतें पहचानकर आगे बढ़ सकते हैं।

उच्च प्राथमिक स्तर पर प्रमोट हुए जिन बच्चों को उपचारात्मक सहयोग की ज़रूरत है, उनके लिए 2 या 3 कक्षाओं को मिलाकर यानी बहु-कक्षा, बहु-स्तरीय शिक्षण का तरीका मदद कर सकता है। स्कूल की दीवारों को बच्चों के सीखने में इस्तेमाल होने वाली सामग्री से सजाया जा सकता है। इससे बच्चों का एक्सपोज़र बढ़ेगा और उनके सीखने की गति में वृद्धि होगी।

इन सम्भावित समाधानों पर विषयवार व्यवस्थित कार्य करने के अतिरिक्त प्रयासों की महती आवश्यकता है। यदि विद्यालय खुलने से पहले तैयारी कर लें तो रास्ते शायद और आसान हो जाएँगे। महत्त्वपूर्ण यह है कि शिक्षक इस बारे में चिन्तित हैं और वे अपने प्रयासों से महामारी के बाद शिक्षा की तस्वीर को ज़रूर बदलेंगे।

*बच्चों की पहचान छुपाने के लिए नाम बदल दिए गए हैं।

Endnotes

i National Achievement Survey

ii शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट (एनुअल स्टेटस ऑफ़ एजुकेशन रिर्पोट)



विपिन कुमार ने सनातन धर्म कॉलेज, मुज़्ज़फरनगर (चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से सम्बद्ध) से रसायन शास्त्र में एमएससी की पढ़ाई की है। वह पिछले सात वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़े हुए हैं। इसके पहले वे पीजी कॉलेज भैला, सहारनपुर में रसायन शास्त्र पढ़ाया करते थे। उनसे vipin.kumar@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अभिव्यक्ति को सुलभ बनाने के लिए कला-एकीकृत पाठ

विश्वनाथ

जब हम महामारी के प्रभावों से उभरना शुरू करेंगे, तब ज़रूरी है कि हम अपने आसपास के लोगों के प्रति संवेदनशील रहें। इस अनुभव ने हमें अपनी अनेक ख़राब आदतों व जीवन जीने के तरीक़ों को बदलने का मौक़ा दिया है और स्वच्छता व प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण पर अधिक ध्यान देकर हम यह कर सकते हैं। हमारी सीखने-सिखाने की रणनीति का उद्देश्य स्कूलों में बच्चों को सहज और सुरक्षित वातावरण प्रदान करना होना चाहिए।

स्कूलों को बन्द हुए एक साल से अधिक हो गया है और अधिकांश बच्चे स्कूल में सीखी गई बातों को भूल गए हैं। यह उनके पढ़ने और लिखने के कौशलों के पुनर्निर्माण का समय है। लेकिन यह प्रक्रिया बच्चों की भावनात्मक तैयारी का आकलन करने के बाद ही शुरू की जानी चाहिए। आज, शिक्षक और पूरी शिक्षा व्यवस्था पशोपेश में है और वे यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि किस तरह पाठों की योजनाएँ बनाई जाएँ, कहाँ से शुरुआत हो और बच्चों के अब तक के सीखे हुए का आकलन कैसे करें।

कला गतिविधियों के माध्यम से सीखना

यह अत्यावश्यक है कि बच्चों को सीखने के आनन्दपूर्ण अनुभव हासिल हों। साथ ही यह सुनिश्चित करना भी उतना ही आवश्यक है कि सभी बच्चे स्कूल परिसर में अपना व दूसरों का ख़याल रखने के लिए ज़रूरी सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन करें। इसके साथ ही शिक्षकों को निपुण तरीक़ों से बच्चों को याद दिलाते रहना होगा कि इस दौरान वे जो भी महसूस कर रहे हों उसे खुलकर व्यक्त करें। यह कुछ तरीक़े हैं जिन्हें शिक्षक अपना सकते हैं :

- प्रत्येक बच्चे के प्रति संवेदनशील और सम्मानपूर्ण रवैया अपनाएँ।
- बच्चों को अपनी भावनाओं को साझा करने और व्यक्त करने के लिए स्कूल के भीतर एक भयमुक्त वातावरण को सुनिश्चित करें।
- ऐसी समूह गतिविधियों की योजना बनाएँ जो बच्चों को *कोविड-19* से जुड़ी सावधानियों का पालन करते हुए एक-दूसरे के साथ घुलने-मिलने में मदद करें।
- स्थानीय स्रोत व्यक्तियों और बच्चों के माता-पिता को अपनी स्थानीय परम्पराओं, लोककथाओं और गीतों से परिचित कराने के लिए आमंत्रित करें।
- ऐसी गतिविधियों की योजना बनाएँ जो बच्चों में रचनात्मकता को बढ़ावा दें, जैसे कला को सभी कक्षाओं और सभी विषयों की पाठ-योजनाओं के साथ एकीकृत करना।
- माता-पिता और भाई-बहनों की मदद लेते हुए स्थानीय संसाधनों और कबाड़ का उपयोग करके कलाकृतियों के निर्माण को बढ़ावा दें।

स्कूल का पहला दिन

अज़ीम प्रेमजी स्कूल, कलबुर्गी, कर्नाटक में स्कूल फिर से खुलने के पहले दिन हम पेंटिंग, क्ले मॉडलिंग और खेल खेलने जैसी कुछ कला गतिविधियाँ करने की योजना बना रहे हैं। हम उम्मीद कर रहे हैं कि ये गतिविधियाँ बच्चों के स्कूल लौटने के अनुभव को आनन्दपूर्ण बनाएँगी। यह योजना नए बच्चों को हमारी स्कूली संस्कृति से परिचित होने में मदद करेगी और इससे बच्चों के बीच का मेल-जोल बढ़ेगा। हम कलाकृतियों का एक प्रदर्शन भी आयोजित करेंगे जहाँ बच्चे अपनी कृतियों के बारे में बात करेंगे, अपनी कविताओं और गीतों को साझा करेंगे, अपनी धुनें बनाएँगे। साथ ही वे रसोई के बर्तनों, प्लास्टिक की बोतलों और प्राकृतिक सामग्री का उपयोग करके विभिन्न संगीत वाद्ययंत्रों की आवाज़ों का भी पता लगाएँगे। कुछ शारीरिक खेल भी खेलेंगे जो उनमें नई ऊर्जा भर दे। सारे विषयों में विभिन्न अवधारणाओं को सीखने में रुचि बढ़ाने के लिए हर सम्भव प्रयास किया जाएगा।

महामारी के दौरान, हमें सीखने-सिखाने की सामग्री (टीएलएम) को अलग-अलग सामुदायिक शिक्षण केन्द्रों तक ले जाने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इसके अलावा हमें बच्चों के साथ ऑनलाइन वीडियो साझा करने और गाने सुनने के दौरान इंटरनेट कनेक्टिविटी में परेशानी हुई। सामुदायिक कक्षाओं में जगह की कमी थी जिसने ज़्यादा-से-ज़्यादा बच्चों तक हमारी पहुँच के उद्देश्य को सीमित कर दिया। समूहों में इकट्ठा होने पर प्रतिबन्ध के कारण, स्थानीय कलाकारों व स्रोत व्यक्तियों को आमंत्रित करने और बच्चों को स्थानीय कलाओं से परिचित कराने की हमारी योजनाओं को भी स्थगित करना

पड़ा। सबसे अहम बात यह रही कि हम हर एक बच्चे के सीखने के परिणामों पर ध्यान नहीं दे पाए।

लेकिन इन सभी चुनौतियों के बावजूद, बच्चों ने सामुदायिक कक्षाओं में कराई गईं कला-आधारित गतिविधियों को बहुत पसन्द किया। इसके माध्यम से, उन्होंने ख़ुद से कई चीज़ों की खोज की और अपनी रचनात्मक क्षमताओं पर विश्वास करना सीखा। स्कूल के फिर से खुलने के बाद भी हम इसी तरह के अभ्यास जारी रखने की योजना बना रहे हैं।

वर्तमान में, हम आशा करते हैं कि स्कूल जल्द ही खुलेंगे और हम नियमित रूप से काम कर पाएँगे। अभी हमें बच्चों को पढ़ाने में जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, स्कूल में कक्षाओं के शुरू होने के बाद वे ख़त्म हो जाएँगी। जब हम प्रत्येक बच्चे के साथ आमने-सामने होकर काम करेंगे तब हम अधिक प्रभावी ढंग से पढ़ा सकेंगे। हम बच्चों को ऐसी शारीरिक और कला आधारित गतिविधियाँ भी करा पाएँगे जिनमें समूह में काम करना और एक-दूसरे से सीखना काफ़ी महत्त्वपूर्ण होता है। सबसे ज़रूरी बात यह है कि हम बच्चों के नियमित पोषण को सुनिश्चित कर पाएँगे जो बच्चों के सीखने और उनके समग्र विकास को सीधे प्रभावित करता है।

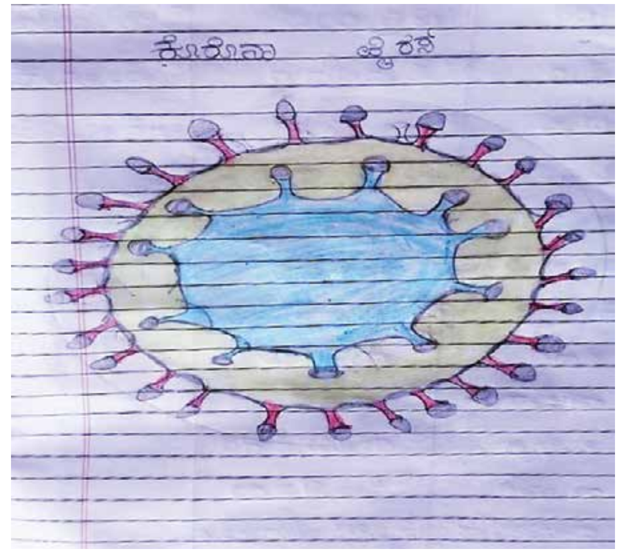
गतिविधियों का हमारा अनुभव

मैं यहाँ कुछ गतिविधियों के बारे में बता रहा हूँ जो हमने कोविड के कारण स्कूलों के बन्द होने के दौरान बच्चों के साथ कीं। जब हमने बच्चों को बात करने और अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में सहयोग देने के लिए कुछ अभ्यास शुरू किए तो हमने पाया कि बच्चों की तरफ़ से सबसे ज़्यादा प्रतिक्रियाएँ कला से जुड़ी गतिविधियों और संगीत के दौरान आ रही थीं। हमने कुछ मज़ेदार गतिविधियों को भी शामिल किया ताकि बच्चे ख़ुशी-ख़ुशी सीख सकें।

महामारी के दौरान बच्चे स्वच्छता और सुरक्षा सावधानियों के बारे में सीख सकें इसके लिए, हमने उन्हें यह गीत सिखाए



: कन्नड़ में ‘बायी बायी कोरोना निनु होगाले बेकिदे’ और अँग्रेज़ी में ‘Wash, wash, wash your hands, wash



your hands together’। हमने इन गीतों को एक सैनिटाइज़र का उपयोग करते हुए सिखाया। इसमें हमने उन्हें सैनिटाइज़र से हाथों को रगड़कर साफ़ करने का सबसे अच्छा तरीक़ा दिखाया। शुरुआत में, जब बच्चे गाने में झिझक रहे थे तो हम शिक्षकों ने उनके साथ हाव-भाव और भंगिमाओं के साथ गाने गाए। जब हम सबने खड़े होकर भाव-भंगिमाओं के साथ धुनों



को गाया तो यह बात बच्चों को बहुत अच्छी लगी। हमने धीरे-धीरे mask, sanitizer, virus, social-distance, lockdown, unlock और seal-down जैसे शब्दों के अँग्रेज़ी अक्षरों और उनके अर्थों से बच्चों का परिचय कराया। धीरे-धीरे बच्चे सैनिटाइज़र का इस्तेमाल करते हुए ऊपर बताए गए गीत गाने लगे। वे इन शब्दों के अर्थों से भी वाक़िफ़ हो गए और नियमित बातचीत में उनका उपयोग भी करने लगे। कुछ बच्चों ने कन्नड़ में अपने गीत भी लिखे, उन्हें अपनी ही बनाई धुनों पर गाया और फिर यूट्यूब पर अपलोड भी किया।

बच्चे तब विशेष रूप से ख़ुश दिखे जब हमने उन्हें अनुपयोगी काग़ज़ से मास्क बनाना सिखाया। अपने बनाए हुए मास्क बच्चों ने अपने भाई-बहनों और माता-पिता को भी दिए। बच्चों ने उपलब्ध जानकारी और अपनी कल्पना के आधार पर कोरोना वायरस के चित्र बनाए। उन्होंने अपनी रचनाओं के बारे में चर्चा भी की।

कुछ बच्चे डाण्डिया स्टिक बनाकर डाण्डिया की ताल पर नाचे। इस गतिविधि का उद्देश्य था, बच्चों को लोक गीतों से परिचित कराकर उन्हें अपनी भावनाएँ व्यक्त करने में मदद करना। फिर भी कुछ बच्चे ऐसा करने में झिझक रहे थे, इसलिए हमने उन्हें एक डायरी बनाने को कहा जिसमें वे अपने विचारों और भावनाओं को खुलकर लिख सकते थे।

बच्चों ने कई आकृतियों (वृत्त, वर्ग, आयत और अनियमित आकारों की भी, जैसा कि चित्र में दिखाया गया है) की डायरियाँ बनाईं। डायरियों में बच्चों ने अँग्रेज़ी में लिखा और इमोजी का इस्तेमाल करते हुए अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं।

एक अन्य गतिविधि में बच्चों ने काग़ज़ पर एक-दूसरे की हथेलियों को छापा। इस गतिविधि ने उन्हें अपने साथियों के साथ बातचीत करने का मौक़ा दिया जिससे वे धीरे-धीरे स्कूल में संवाद करने के लिए तैयार महसूस करने लगे। उन्होंने क्ले मॉडलिंग और सीप व मोतियों जैसी अनुपयोगी वस्तुओं से हार बनाने में भी आनन्द लिया।

बच्चों ने सिलाई जैसे व्यावहारिक कौशल भी सीखे। उन्होंने अपने नाम कपड़े पर सिलाई से उकेरे। उन्होंने चाय के कपों को पेंट करने में भी आनन्द लिया। इन कपों में वे बीज बोते थे और पौधों को बढ़ते हुए देखते थे। वे उन्हें नियमित रूप से पानी देते थे और पौधों में हो रही वृद्धि को प्रतिदिन रिकॉर्ड करते थे। उन्होंने घर पर खेलने के लिए लूडो, साँप-सीढ़ी और शतरंज जैसे खेलों के बोर्ड बनाए। इससे उन्हें आकृतियाँ, रेखाएँ और 1-100 तक की संख्याएँ सीखने में मदद मिली।





विश्वनाथ अज़ीम प्रेमजी स्कूल, कलबुर्गी, कर्नाटक में संगीत पढ़ाते हैं। उन्होंने गुलबर्गा विश्वविद्यालय से हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत (गायन) में एमए किया है। उन्होंने शास्त्रीय संगीत (गायन) और हारमोनियम बजाना अपने पिता गुरु पण्डित तेवैय्या वस्त्रदमथ से सीखा है। उनसे vishwanath@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** संदीप दुबे